उत्तराखण्ड राज्य की आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था की धुरी-नारी

✧ डॉ. ऋतु डंगवाल

नवगठित उत्तराखण्ड राज्य देश का सत्ताईवसां राज्य है जो 9 नवम्बर 2000 को अस्तित्व में आया। इससे पूर्व यह उत्तर प्रदेश का अभिन्न भाग था। कई वर्षों के अथक प्रयास के फलस्वरूप इस पर्वतीय क्षेत्र को उत्तराखण्ड राज्य का दर्जा मिला। उत्तराखण्ड राज्य का अधिकांशतः भू–भाग पर्वतीय है। यहां की अपनी विषम व भौगोलिक परिस्थिति होने के साथ–साथ ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर ने सम्पूर्ण सौंदर्य व शांति यहां बिखरे दी है। चार धाम यात्राओं के लिए प्रसिद्ध उत्तराखण्ड राज्य के कण–कण में ईश्वर का निवास है। ऐसा विश्वास उत्तराखण्ड में आने वाले देशी–विदेशी पर्यटकों का है। इस राज्य में इतना कुछ होने के बावजूद एक जटिल प्रश्न सबको अपनी ओर बरबस आकर्षित करता है वह है– यहां की नारी। यदि हम यहां के समाज का अध्ययन करें तो पायेंगे कि नारी हर क्षेत्र में जैसे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि व्यवस्थाओं की धुरी है। पहाड़ की नारी कितनी ही दबी–कुचली क्यों न हो वह हर अवस्था में यहां के सामाजिक, आर्थिक जीवन की मेरूदण्ड है। उसकी सहनशीलता, परिश्रम करने की क्षमता, शक्ति सामर्थ्य अद्‌भुत है। आज आजादी के 60 वर्ष बीत जाने के बाद भी यहां की नारी अभी भी अपनी प्रगति की बाट जो रही है। उत्तराखण्ड की जनसंख्या का लगभग आधा प्रतिनिधित्व होते हुए भी नारी का असहनीय श्रम, समाज में उसके प्रति अनुदार भावना व निष्ठुर उदासीनता के कारण अपनी विविध अद्‌भुत क्षमताओं का समाज के कल्याण में भागीदारी नहीं दे पा रही हैं। इसका मुख्य कारण अज्ञानता, जागरूकता का अभाव, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास आदि मुख्य कारण हैं। पहाड़ के इन पिछड़े क्षेत्रों में आज भी महिलायें अज्ञानता के अंधेरे में भटक रही हैं। वे यहां की भौगोलिक कठिनाइयों, सामाजिक व आर्थिक शोषण में जीवन यापन करने को मजबूर है।

उत्तराखण्ड राज्य भारत का ग्यारहवां पर्वतीय राज्य है। भौगोलिक दृष्टिकोण से इसका विस्तार 280 42श उत्तरी अक्षांश से 310 28श उत्तरी अक्षांश तथा 770 34श पूर्वी देशान्तर से 810 5श पूर्वी देशांतर तक स्थित है। इसकी पूरब से पश्चिम लंबाई 359 किमी. एवं उत्तर से दक्षिण की चौड़ाई 320 किमी. है, जिसका कुल क्षेत्रफल 53,483 वर्ग किमी. है। इस राज्य के उत्तर में हिमाचल प्रदेश एवं चीन (तिब्बत), पूरब में नेपाल, दक्षिण में उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम में हरियाणा एवं हिमाचल प्रदेश स्थित है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से इस उत्तरी सीमान्त राज्य के दो मण्डल गढ़वाल एवं कुमाऊँ है, जिसमें 13 जनपद क्रमशः उत्तरकाशी, रूद्रप्रयाग, चमोली, टिहरी गढ़वाल, पौड़ी, देहरादून, हरिद्वार, बागेश्वर, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, चम्पावत, नैनीताल एवं ऊधमसिंह नगर हैं। इस राज्य की कुल जनसंख्या वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार 84,79,562 है। राज्य में कुल साक्षरता 72.28 प्रतिशत है जिसमें पुरूष साक्षरता 84.01 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता 60.26 प्रतिशत है। जनसंख्या की दृष्टि उत्तराखण्ड देश का 20वाँ राज्य है तथा यहां देश की 0.83 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।

पं. नेहरू का कथन था कि बच्चे देश का भविष्य हैं। नारी स्वस्थ शिशु को जन्म देकर देश के विकास में भागीदारी सुनिश्चित कर सकती है। नारी को समाज में सदैव ही उच्च दर्जा देकर पूजनीय माना जाता है। इतिहास गवाह है कि नारी की भूमिका व भागीदारी देश की रक्षा, समाज कल्याण एवं विकास के कार्यों में पुरूषों की अपेक्षा कम नहीं रही है। हमारे संविधान के अनुच्छेद 14 सभी भारतीय नागरिकों के लिए सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक न्याय सुनिश्चित करता है तथा कानून के सम्मुख सभी समान हैं। किसी के प्रति रंग, जाति, लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जायेगा। इस बात का प्रावधान भी संविधान में किया गया है। इसी प्रकार अनुच्छेद 15 (3) के अनुसार राज्यों को यह अधिकार दिया गया है कि महिलाओं के विकास एवं प्रगति के लिए राज्य विशेष प्रावधान कर सकता है। लेकिन धरातल में देखा जाये तो आज भी महिला अपने अस्तित्व को तलाश रही है। जितना प्रावधान संविधान में महिलाओं के लिये किया गया यदि ईमानदारी से उसका आधा भाग भी लागू किया जाता तो महिलाओं की स्थिति अत्यधिक अच्छी होती। यदि हम पहाड़ की महिलाओं की बात करें तो पायेंगे कि उनकी स्थिति तो अत्यंत शोचनीय है।

इस प्रदेश में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं पर काम–काज का अत्यधिक बोझ है। क्योंकि यहां का पुरूष वर्ग रोजगार व आजीविका के साधन जुटाने हेतु घर से बाहर अन्य शहरों या प्रदेशों की तरफ पलायन कर रहा है। जिसके कारण घर व बाहर की सम्पूर्ण जिम्मेदारियां महिलाओं के ऊपर आ जाती हैं। इन जिम्मेदारियों को निभाने के लिए उन्हें अत्यधिक शारीरिक, मानसिक व आर्थिक कष्टों से जूझना पड़ता है। यदि आंकलन किया जाए तो हम पायेंगे कि इस पर्वतीय क्षेत्र की महिलाएँ एक स्वस्थ पुरूष से दौगुना कार्य करती हैं किन्तु वास्तविकता यह है कि महिलाओं के इतने अत्यधिक त्याग के बावजूद भी समाज में उन्हें सम्मान व लाभ नहीं मिल पा रहा है। महिलाओं पर काम–काज का बोझ यहां की पारम्परिक एवं सामाजिक अनिवार्यता व मजबूरी भी है। महिलाएँ मौलिक ज्ञान व जागरूकता की कमी के कारण जीवन भर अस्वस्थ रहकर कठिनाइयों व चुनौतियों से भरा जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर हैं। यहाँ की महिलाएँ अत्यधिक काम–काज व मेहनत करने के बावजूद भी उनका सामाजिक कुरीतियों, कुंठाओं व अज्ञानता के कारण शोषण हो रहा है।

jktdh; mPprj ek/;fed fo|ky; cMFkh ¼pxh½] mÙkjdk'kh ¼mÙkjk[k.M½

पर्वतीय अंचलों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि योग्य कार्यों के अतिरिक्त अन्य सभी कार्य (जैसे चारा, लकड़ी, पानी, दूध निकालना व बाजार में विपणन की व्यवस्था आदि) अधिकाधिक मात्रा में महिलाओं द्वारा ही सम्पन्न किये जाते हैं। इस पर्वतीय क्षेत्र की महिलाओं के विषय में आमतौर पर कहा जाता है कि अत्यधिक कार्य करने के कारण ये महिलाएँ पहाड़ जैसा जीवन यापन करने को मजबूर हैं। एक सीमा से अधिक कार्य करने के कारण महिलाएँ परिवार व स्वयं के लिए समुचित समय नहीं निकाल पाती हैं। इससे न तो बच्चों को माँ का प्यार व देखरेख मिलती है और न ही माँ बच्चों की शिक्षा व विकास पर समुचित ध्यान दे पाती है। यह पर्वतीय राज्य मुख्यतः कृषि पर आधारित है। सामान्यतः इस क्षेत्र के सम्पूर्ण कार्य जैसे– कृषि, ईंधन, चारा की व्यवस्था आदि के विभाजन का 70 प्रतिशत से 80 प्रतिशत भाग महिलाओं द्वारा सम्पन्न किया जाता है। ईंधन व चारा एकत्रित करने का कार्य केवल महिलाएँ ही करती हैं जबकि वास्तविकता यह है कि ईंधन व चारा एकत्रित करना पर्वतीय महिलाओं द्वारा किया जाने वाला अत्यन्त कठिन कार्य है। जिसके लिए उन्हें औसतन 8 से 10 मील प्रतिदिन चलना पड़ता है और साथ ही दिन का अधिकांश समय इसी कार्य में नष्ट हो जाता है। इस क्षेत्र की जनसंख्या के आंकड़ों को लिंग और आयु के आधार पर देखने से ज्ञात होता है कि पर्वतीय अंचल में जनसंख्या के प्रति हजार पुरूषों के अनुपात में 1172 महिलाएँ हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि गांवों में कामकाजी महिलाओं का अनुपात पुरूषों से अधिक है।

नवगठित उत्तराखण्ड राज्य में महिलाओं की सामाजिक आन्दोलन में विशेष भागीदारी रही है लेकिन आर्थिक मामलों में काफी पीछे रह गयी हैं। इन पर्वतीय क्षेत्रों में महिलाओं ने चिपको, खनन, शराब विरोधी आदि आन्दोलनों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस पर्वतीय राज्य में महिलाएँ ही समाज व परिवार के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यहां की महिलाएँ अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं लेकिन खुद इनकी आर्थिक स्थिति दयनीय बनी हुई है। सदियों से दबी–कुचली, असहाय व पीड़ा से टूट चुकी महिलाएँ यहां के सामाजिक ताने–बाने की मेरूदण्ड है। यहां की महिलाओं को अपने समग्र व्यक्तित्व के विकास के लिए समय नहीं है। शराब, पलायन, मनीऑर्डर प्रथा व आर्थिक आदि समस्याओं के चलते महिलाएँ एकाकी जीवन व्यतीत करने को विवश हैं।

केन्द्र एवं राज्य सरकारों की लाख घोषणाओं के बाद भी महिला एवं पुरूष में समानता, जनसंख्या अनुपात, साक्षरता तथा आर्थिक स्तरों पर सुधार नहीं हुआ है। महिलाएँ आज भी पिछड़ेपन का शिकार हैं। इसका मुख्य कारण विकास कार्यों में उनकी भागीदारी विशेषकर निर्णय की भागीदारी का न होना है। एक कारण यह भी हो सकता है कि महिलाओं को मौलिक अधिकार तो प्रदान किए गए हैं लेकिन उनको लागू करने की ठोस पहल नहीं की गयी है। यहां महिलाएँ विकास प्रक्रिया से नहीं जुड़ पायी हैं। यही वजह है कि महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रों में पिछड़ी हुई हैं। यदि हम यहां की महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक पक्षों को क्रियाशील व प्रगतिशील बनाना चाहते हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि उन्हें अज्ञानता के अंधेरे से बाहर निकालकर ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित व अवलोकित किया जाए अर्थात् उन्हें शिक्षित किया जाए। तभी वह अपनी क्षमता व सार्थकता को समझेंगी और राज्य की विकास प्रक्रिया में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगी।

निष्कर्ष–इतिहास गवाह है कि उत्तराखण्ड राज्य के निर्माण के आंदोलन के साथ–साथ पहाड़ में जितने भी जन–आन्दोलन चले वे तभी सफल हुए जब उनमें महिलाओं की भागीदारी रही है। यहां की महिलाएँ संघर्षशील, ईमानदार व अत्यधिक मेहनती हैं। यहां की नारी सम्पूर्ण सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था की केन्द्रीय धुरी है। इसके बावजूद उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है। समाज में उसकी कोई पहचान नहीं है व अपने अथक परिश्रम से कमाये गये धन पर उसका कोई अधिकार नहीं है। यदि हम पहाड़ की महिलाओं के अस्तित्व व सम्मान को बचाना चाहते हैं तो सबसे पहले उसको शिक्षित किया जाए व साथ ही उसको उसके अधिकारों से परिचित कराया जाये ताकि वह स्वंय अपने वजूद को पहचान कर रूढ़िवादी सामाजिक मान्यताओं व दायरे से खुद को अलग कर सके। जो ये मानते हैं कि सारे सामाजिक व आर्थिक कार्य उसे (नारी) ही करने हैं। शिक्षा की यह रोशनी उसके पथ को प्रदर्शित करेगी व उसे एक नया आयाम दिखायेगी जिसकी हम सबको तलाश है।

xFk lph&

भट्ट, आर., 2005, ''उत्तरांचल राज्य के गढ़वाल मण्डल के टिहरी व उत्तरकाशी जनपदों में नारी शिक्षा की प्रगति का अध्ययन (स्वतंत्रता प्राप्ति से सन् 2001 तक)'', हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल।